INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग - 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp Link- https://wa.link/uwc5lp

Online Order Link- https://bit.ly/3X6MGue

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	राजस्थान का इतिहास	
1.	**प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख घटनाएँ** • इतिहास का अध्ययन • प्रशस्ति • राजस्थान में सिक्के • साहित्यिक स्रोत • प्राचीन सभ्यताएं	1
2.	**राजस्थान के ऐतिहासिक स्थल व केंद्र** • हिस्ट्रीकल पैलेस ऑफ राजस्थान • महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र	31
3.	**महत्वपूर्ण राजवंश** • गुर्जर प्रतिहार वंश • गुहिल वंश • चौहान वंश का इतिहास • परमार वंश • मारवाड़ का इतिहास • राठौड़ वंश • कच्छवाहा राजवंश	42
4	**मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था एवं बदलता स्वरुप** • केन्द्रीय शासन • समान्त व्यवस्था	98
5.	**राजस्थान का आधुनिक इतिहास** • राजस्थान में 1857 की क्रांति • 1857 ई. की क्रांति का स्वरुप या क्रांति की प्रकृति	102
6.	**राजस्थान के प्रमुख किसान आंदोलन** • राजस्थान में किसान आंदोलन के कारण • राजस्थान में किसान आंदोलन के प्रभाव • जनजातीय या आदिवासी आंदोलन	109
7.	**राजस्थान में प्रजामण्डल आंदोलन**	121

	• मारवाड़ में प्रजामण्डल आंदोलन • प्रजामंडल आंदोलन के सामाजिक प्रभाव	
8.	**राजस्थान का एकीकरण** • एकीकरण से पूर्व रियासतें, 1857 के विद्रोह के समय शासक तथा एकीकरण के समय शासक • एकीकरण के चरण	**134**
	कला एवं संस्कृति	
1.	**राजस्थान की वास्तु परम्परा** • मंदिर • राजस्थान की मस्जिदें, दरगाह एवं मकबरें • किले एवं महल • राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ • हवेलियाँ	**142**
2.	**चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प** • राजस्थानी चित्रकला का उद्भव और विकास • ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं • राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण • हस्तशिल्प	
3.	**प्रदर्शन कला** • शास्त्रीय संगीत • शास्त्रीय नृत्य • लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र • लोक नृत्य एवं नाट्य	**200**
4.	**राजस्थान के प्रमुख मेले एवं त्यौहार**	**234**
5.	**प्रमुख जनजातियाँ एवं उनकी परम्पराएँ रीति – रिवाज** • विवाह से सम्बंधित रीति – रिवाज • राजस्थान में शोक से संबंधित रस्में • राजस्थान की प्रमुख प्रथाएँ • वेश एवं आभूषण	**247**
6.	**भाषा एवं साहित्य** • राजस्थानी भाषा का साहित्य एवं लोक साहित्य	**258**

	• *राजस्थान के प्रमुख कवि व रचनाकार* • *राजस्थानी साहित्य से सम्बंधित संस्थाएँ*	
7	***धार्मिक जीवन*** • *राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय*	***270***
8.	***राजस्थान के लोक देवी – देवता*** • *लोक देवियाँ* • *लोक देवता*	***280***
9.	***महत्वपूर्ण विभूतियाँ***	***290***

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख घटनाएँ

परिचय

सामान्यतः इतिहासकार मानव समाज, उसकी गतिविधियों, संस्थाओं, संस्कृति और परिवर्तनशीलता का कालानुक्रमिक अध्ययन ही इतिहास है ।इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

> हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय **पर्शियन युद्धों (यूनान-फारस युद्ध)** के बारे में लिखा था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका('द हिस्टरीज') थी।

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

प्रागैतिहासिक काल वह काल है जिसके बारे में लिखित स्रोत उपलब्ध नहीं हैं तथा जिसकी जानकारी केवल पुरातात्विक साक्ष्यों — जैसे पाषाण उपकरण, जीवाश्म, गुफा-चित्र एवं आवास अवशेष — से प्राप्त होती है। यह मानव सभ्यता के प्रारम्भिक विकास का काल है, परंतु इसे मानव की उत्पत्ति का काल नहीं माना जाता; मानव की उत्पत्ति जैविक विकास की दीर्घ प्रक्रिया का परिणाम है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं । इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं । सिंधु लिपि को 'भाव-चित्रात्मक' (Pictographic) भी कहा जाता है क्योंकि इसमें अक्षरों के स्थान पर चित्रों (जैसे मछली, चिड़िया आदि) का प्रयोग अधिक किया गया है। इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

यह मानव विकास का वह काल है जिसके लिए **लिखित विवरण** उपलब्ध हैं और उन विवरणों को आधुनिक विद्वानों द्वारा **सफलतापूर्वक पढ़ा जा चुका है**। जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

प्राचीन इतिहास के स्रोत – पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।

भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं

महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय संहिता" था।

- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1822 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है ।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा प्राकृत और ब्राह्मी लिपि थी बाद में गुप्तकाल आते आते भाषा संस्कृत हो गयी जबकि

मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।

- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी (जो व्यापारियों और बही-खातों में प्रचलित थी) एवं हर्ष लिपि (कुटिल लिपि का एक रूप) है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

मौर्य सम्राट अशोक के ये दो अभिलेख (भाब्रू और बैराठ) बैराठ (विराटनगर) क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं, जो वर्तमान प्रशासनिक स्वरूप में **कोटपूतली-बहरोड़** जिले के अंतर्गत आता है। भाब्रू शिलालेख की खोज **1837 में कैप्टन बर्ट** द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई थी।

- यह अभिलेख अशोक के 'बौद्ध धम्म' और 'संघ' को प्रमाणित करता है, जिससे उनके **बौद्ध अनुयायी** होने का ठोस साक्ष्य मिलता है। साथ ही, यह राजस्थान में **मौर्य साम्राज्य** के विस्तार की पुष्टि करता है।
- संरक्षण की दृष्टि से इस शिलाखंड को 1840 में **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (कोलकाता)** भेज दिया गया था, जहाँ यह आज भी सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख **अजमेर जिले** की भिनाय तहसील के **बड़ली गाँव** के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

यह अभिलेख **सिरोही** के बसंतगढ़ स्थित क्षेमकरी माता (खिमेल माता) के मंदिर से प्राप्त हुआ है। यह चावड़ा वंश के शासक **राजा वर्मलात** के समय का है।

- **शासक व वंशावली:** इसमें अर्बुदांचल (आबू) के शासक **राज्जिल** और उनके पुत्र **सत्यदेव** का विवरण मिलता है।
- **लेखक व उत्कीर्णकर्ता:** इसके लेखक **द्विजन्मा** थे और इसे **नागमुण्डी** द्वारा उत्कीर्ण किया गया था।
- यह **दधिमति माता अभिलेख** के बाद पश्चिमी राजस्थान का दूसरा सबसे प्राचीन अभिलेख माना जाता है।
- इस अभिलेख की सबसे बड़ी विशेषता इसमें **सामंत प्रथा (Feudal System)** का उल्लेख होना है।
- इसमें मेवाड़ के प्रतापी शासक **शिलादित्य** का भी वर्णन मिलता है।
- इस अभिलेख का एक विशेष महत्व यह भी है कि इसमें **'राजस्थानियादित्य'** शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसे राजस्थान नाम के प्राचीनतम प्रयोगों में से एक माना जाता है।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में '**अमृत मंथन**' का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डौर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (अंता तहसील, बारां जिला) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।

- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चाचिगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में **'बापा'** से **'महाराणा समरसिंह'** तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराडू का लेख :-(बाड़मेर)

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :-

- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर(पाली)में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में उस समय के विभिन्न करों व भूमि की नाप के बारे में जानकारी मिलती है।

श्रृंगी ऋषि का लेख :-

- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास श्रृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार **'कविराज वाणीविलास योगेश्वर'** थे एवं उत्कीर्णकर्ता हदा के पुत्र पन्ना थे।
- यह महाराणा मोकल के समय का है जिसमें राणा हम्मीर से मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस लेख में महाराणा मोकल द्वारा एकलिंगजी मंदिर के चारों ओर दीवार बनवाने तथा नागौर शासक फिरोज खाँ एवं गुजरात शासक अहमद खाँ को युद्ध में पराजित करने का उल्लेख है।
- इस लेख में राणा लाखा द्वारा काशी, प्रयाग व गया (त्रिस्थली) की यात्रा करने का उल्लेख भी मिलता है।

आमेर का लेख :-

- 1612 ई. में संस्कृत तथा नागरी भाषाओं में उत्कीर्ण इस लेख से कच्छवाहा शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस लेख में कच्छवाहा वंश को **'रघुवंश तिलक'** कहा गया है।
- **इसमें मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।**

बरबथ का लेख :-

- 1613-14 ई. के इस लेख में मुग़ल शासक अकबर की पत्नी मरियम-उज-ज़मानी द्वारा निर्मित बरबथ बाग एवं बयाना बावड़ी का उल्लेख मिलता है। **यह मुग़ल राजपूत वैवाहिक संबंध का बोध कराता है।**

सांभर का लेख (1634 ई.):-

- यह लेख एक सराय के दरवाजे पर हिन्दी भाषा में उत्कीर्ण है।
- इसमें अकबर द्वारा इस सराय के निर्माण करने तथा शाहजहाँ द्वारा 1634 ई. में इसका जीर्णोद्धार करने का उल्लेख है।

किणसरिया लेख (999 ई.):-

- संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण यह लेख **डीडवाना-कुचामन** के किणसरिया गाँव में अंकित है।
- इस लेख में चौहान वंश के शासक वाक् पतिराज, सिंहराज तथा दुर्लभराज की विजयों व उपलब्धियों का वर्णन है।
- दूसरे भाग में दधीचि वंश के चच्च द्वारा मंदिर बनाने का उल्लेख है।

भ्रमरमाता का लेख :-

- प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी के भ्रमर माता मंदिर से प्राप्त 490 ई. का शिलालेख 5वीं सदी की राजनीतिक स्थिति एवं प्रारंभिक कालीन सामन्त प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है।
- इस शिलालेख में गौर वंश एवं औलिकार वंश के शासकों का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख का उत्कीर्णक ब्रह्मसोम था।

पाणाहेड़ा का लेख (1059 ई.) :-

- बाँसवाड़ा के पाणाहेड़ा गाँव से प्राप्त लेख।
- इस लेख में वागड़ एवं मालवा के परमार वंश के राजाओं (मुंज, सिंधुराज एवं भोज) की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

नांदसा यूप स्तम्भ लेख (225 ई.):-

- भीलवाड़ा जिले के नांदसा गाँव से प्राप्त स्तम्भ लेख।
- यह स्तम्भ लेख 'सोम' द्वारा स्थापित है।
- इस स्तम्भ लेख से उत्तरी भारत में प्रचलित वैदिक श्रौत यज्ञों के बारे में जानकारी मिलती है।

बर्नाला यूप स्तम्भ लेख (227 ई.):-

- यह स्तम्भ लेख जयपुर रियासत के बरनाला ग्राम में स्थित था।
- बर्नाला (जयपुर) से प्राप्त।
- वर्तमान में आमेर संग्रहालय में सुरक्षित।

बिचपुरिया यूप स्तम्भ लेख (274 ई.):-

- यह जयपुर जिले के उणियारा ठिकाने से प्राप्त।
- वर्तमान में यह टोंक जिले में है।

तलेटी मस्जिद का लेख (1420 ई.):-

- बयाना (भरतपुर) से प्राप्त।

- इस मस्जिद का निर्माण मलिक मोज्नम ने करवाया था।
- यह 'औढ़ खाँ के समय का अभिलेख है।

गुढ़ड़ी बाजार की मस्जिद का लेख (1741 ई.) :-

- डीडवाना (डीडवाना-कुचामन) से प्राप्त लेख।

रसिया की छतरी का लेख (1274 ई.):-

- चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इस लेख में 13वीं सदी के मेवाड़ की प्रारम्भिक स्थिति के बारे में तथा दास प्रथा व अस्पृश्यता की स्थिति की जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक **प्रियपट्ट तथा सूत्रधार** सज्जन था।

घटियाला के शिलालेख (861 ई.):-

- यह शिलालेख फलौंदी में घटियाला में एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिहार शासक कक्कुक के बारे में उल्लेख किया गया है।
- इसमें रोहिलिद्ध से कक्कुक तक प्रतिहार शासकों की वंशावली मिलती है।
- इस शिलालेख से कक्कुक द्वारा आभीरों को परास्त करने की जानकारी मिलती है।
- इसमें मग जाति के ब्रह्माणों का उल्लेख मिलता है।
- कक्कुक द्वारा यह शिलालेख उत्कीर्ण करवाया गया है जिसका रचयिता मग तथा उत्कीर्णकर्ता कृष्णेश्वर था।
- राजस्थान में पहली बार सती प्रथा की जानकारी देता है।

सांमोली शिलालेख (646 ई.) :-

- उदयपुर से प्राप्त यह शिलालेख गुहिल शासक **शिलादित्य** के समय का है।
- इस शिलालेख से मेवाड़ के गुहिल वंश की सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस शिलालेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि कुटिल है। वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- **डॉ. ओझा ने इसे अजमेर संग्रहालय में रखवाया**

घोसुण्डी शिलालेख -

- यह शिलालेख चित्तौड़गढ़ जिले के नगरी के निकट घोसुण्डी गाँव से प्राप्त हुआ।
- इस शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. डी.आर. भण्डारकर द्वारा खोजा गया / पढ़ा गया था।
- यह राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय (भागवत् सम्प्रदाय) से सम्बन्धित सबसे प्राचीन शिलालेख है।
- यह शिलालेख लगभग 200-150 ई. पूर्व के लगभग का है तथा इससे यह जानकारी मिलती है कि इस समय राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय लोकप्रिय हो चुका था।
- घोसुण्डी शिलालेख की लिपि ब्राह्मी एवं भाषा संस्कृत है।
- घोसुण्डी शिलालेख का महत्व भागवत् धर्म के प्रचार, वासुदेव की मान्यता और अश्वमेघ यज्ञ के प्रचलन के कारण अधिक है।
- घोसुण्डी शिलालेख में गजवंश के सर्वतात द्वारा अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख मिलता है।
- यह ब्राह्मी तथा संस्कृत दोनों भाषाओँ में है।

चित्तौड़ का शिलालेख (1438 ई.) :-

- 1438 ई. में काले पत्थर पर उत्कीर्ण यह लेख चित्तौड़ के सतबीस देवरी से प्राप्त हुआ है जिसमें 104 श्लोक है।
- इस लेख में मेवाड़ शासक राणा हम्मीर से महाराणा मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है तथा हम्मीर को तुर्को को जीतने वाला बताया गया है।
- इस लेख में गुजरात बादशाह के दरबारी गुणराज द्वारा भीषण अकाल में अपनी सम्पत्ति जनता की सहायता के लिए खर्च करने का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति का रचनाकार चरित्ररत्न गणि तथा उत्कीर्णकर्ता नारद था।

बिजौलिया शिलालेख :-

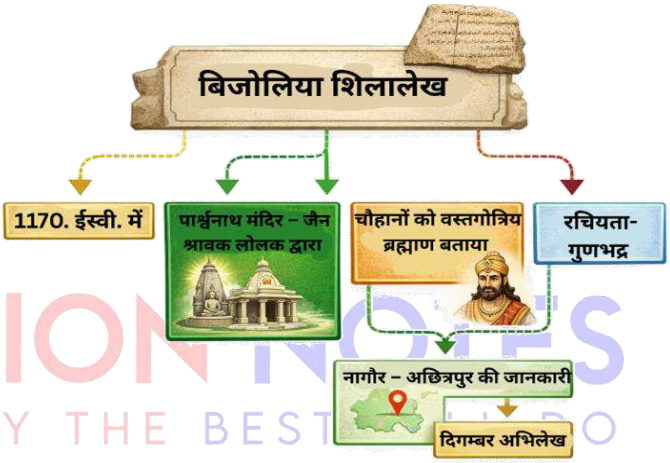

- 1170 ई. का यह शिलालेख बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर के पास एक चट्टान पर जैन श्रावक लोलाक द्वारा बनवाया गया।
- इस शिलालेख में सांभर तथा अजमेर के चौहानों को वत्सगौत्रीय ब्राह्मण बताया गया है तथा उनके वंशक्रम एवं उपलब्धियों का उल्लेख किया गया है।
- इस शिलालेख का रचयिता गुणभद्र था। इसमें 93 संस्कृत पद्य हैं। इस शिलालेख के लेखक कायस्थ केशव एवं उत्कीर्णकर्त्ता गुणभद्र है।
- इस लेख में मेवाड़ में बहने वाली कुटिला नदी का उल्लेख है।
- इस अभिलेख में वासुदेव द्वारा शाकंभरी में चौहान वंश की स्थापना करने तथा सांभर झील बनवाने का उल्लेख है। इसके अनुसार वासुदेव ने अहिछत्रपुर (नागौर) को अपनी राजधानी बनाया।
- इस लेख में कई क्षेत्रों के प्राचीन नाम दिये गये है - जैसे - जाबालिपुर (जालौर), श्रीमाल (भीनमाल), शाकंभरी (सांभर), नड्डुल (नाडोल), दिल्लिका (दिल्ली), उत्तमाद्री (ऊपरमाल), मांडलकर (मांडलगढ़), विन्ध्यवल्ली (बिजौलिया)

अध्याय – 2

राजस्थान के ऐतिहासिक स्थल व केंद्र

हिस्ट्रीकल प्लेसेस ऑफ़ राजस्थान –

आमेर किला –

पिंक सिटी ऑफ़ जयपुर में अरावली पहाड़ी की चोटी पर स्थित आमेर किला राजस्थान का प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है जिसे 1592 ई में राजा मान सिंह द्वारा निर्मित करवाया गया था और अगले 150 वर्षों उनके उत्तराधिकारियों ने इस किले का विस्तार और नवीकरण का काम किया। राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक स्मारक के रूप में जाना जाने वाला यह किला अपनी वास्तुशिल्प कला और इतिहास की वजह से काफी फेमस है। आमेर का किला भारत में इतना ज्यादा प्रसिद्ध है कि यहाँ पर हर रोज करीब पांच हजार से भी अधिक लोग घूमने के लिए आते हैं।

यहां आने वाले पर्यटक रोजाना शाम को इस किले से अद्भुद नजारों को देख सकते हैं। आमेर का किला पर्यटकों और फोटोग्राफरों के लिए स्वर्ग के सामान है, इसलिए आप जब राजस्थान की सैर करने के लिए जाएँ, तो आमेर के किले को देखना न भूलें।

सिटी पैलेस –

सिटी पैलेस जयपुर के केंद्र में स्थित एक प्रसिद्ध महल या पैलेस है जिसे हिस्ट्रीकल प्लेसेस ऑफ़ राजस्थान के रूप में जाना जाता है। राजस्थान के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक में से एक सिटी पैलेस को 1729-1732 ईस्वी में जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा निर्मित करवाया गया था। बता दे इस अद्भुद संरचना के मुख्य वास्तुकार (Architect) विद्याधर भट्टाचार्य और और सर सैमुअल स्विंटन जैकब थे जिसे वास्तुशास्त्री ग्रंथों के अनुसार डिजाइन किया गया था। सिटी पैलेस जयपुर के एक हिस्सा में संग्रहालय जबकि दूसरे हिस्से में जयपुर के पूर्व शासकों के वंशजों (Descendents) का निवास स्थान है।

इस पैलेस में सवाई माधोसिंह प्रथम द्वारा पहना गया कपड़े का सेट रखा गया है, जो 1.2 मीटर चौड़ा था और इसका वजन 250 किलोग्राम था इसके अलावा सिटी पैलेस से और कई रोचक तथ्य जुड़े हुए है जो इतिहास प्रेमियों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने है।

जयगढ़ किला –

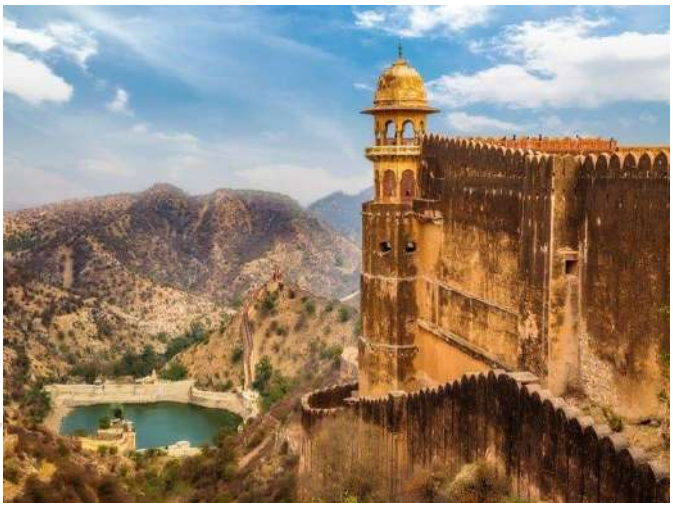

जयगढ़ किला राजस्थान की राजधानी जयपुर के गुलाबी शहर में 'चील का तेला' पहाड़ियों के शीर्ष पर स्थित एक बहुत ही भव्य और ऐतिहासिक संरचना है। इस ऐतिहासिक इमारत को सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा 1726 में आमेर किले की सुरक्षा के लिए बनाया गया था जिसने कभी कभी भी किसी भी बड़े प्रतिरोध का सामना नहीं किया जिस कारण इसे "विजय का किला" के रूप में भी जाना जाता है। मुगल शासन के दौरान यह किला मुख्य तोप फाउंड्री बन गया था और युद्ध के लिए आवश्यक गोला बारूद के साथ अन्य धातु को रखने के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जाने लगा।

इस किले की सबसे बड़ी खास बात यह है कि इस किले में दुनिया की सबसे बड़ी तोप है और यह जयपुर शहर का एक आकर्षक दृश्य भी प्रस्तुत करता है। जयगढ़ किला विद्याधर नामक एक प्रतिभाशाली वास्तुकार द्वारा निर्मित और डिजाइन किया गया जिसकी वजह से यह किला यहाँ आने वाले पर्यटकों को अपनी तरफ बेहद आकर्षित करता है।

नाहरगढ़ किला –

नाहरगढ़ किला राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्थित है, जो कई अनगिनत महलों और सुंदर ऐतिहासिक इमारतों में से एक है जो इस शहर के शानदार और समृद्ध इतिहास को बताता है। कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं से चिह्नित नाहरगढ़ किले को भी जयपुर शहर के संस्थापक, महाराजा सवाई जय सिंह ने 1734 में बनवाया था। नाजुक नक्काशी और पत्थर के शानदार वर्क के साथ नाहरगढ़ किला एक अभेद्य दुर्ग है जो आमेर किले और जयगढ़ किले के साथ मिलकर जयपुर शहर के मजबूत रक्षक के रूप में खड़ा है। इस किले की सबसे अच्छी बात यह थी कि इस किले के लंबे इतिहास में कभी हमला नहीं हुआ। हालाँकि यह किला 18 वीं शताब्दी में मराठा सेनाओं के साथ संधियों पर हस्ताक्षर करने जैसी प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं का स्थल रहा है। जो भी पर्यटक जयपुर घूमने के लिए जाता है वो इस ऐतिहासिक किले को देखे बिना रह नहीं पाता है तो सोचिये पर्यटन के नजरिये से यह किला कितना खास होगा।

पटवों की हवेली – Patwon Ki Haveli

पटवों की हवेली राजस्थान के जैसलमेर में स्थित एक प्राचीन आवास संरचना है जिसको अक्सर 'हवेली' कहा जाता है। यह हवेली राजस्थान का एक प्रमुख पर्यटन और ऐतिहासिक स्थल है। पीले करामाती शेड में रंगीन, पटवों की हवेली इस शहर की यात्रा करने वाले पर्यटकों को अपनी तरफ बेहद अकर्षित करती है। यह मनमोहक हवेली जैसलमेर का एक प्रभावशाली स्मारक है क्योंकि यह शहर के प्राचीन निर्माणों में से एक है। पटवों की हवेली पांच हवेलियों का समूह है जिसका निर्माण एक अमीर व्यापारी 'पटवा' द्वारा किया गया है, जिसने अपने पांच बेटों में से प्रत्येक के लिए एक का निर्माण किया था। जब भी आप यहाँ घूमने आयेंगे तो एक हवाली के परिसर में एक संग्रहालय भी देखने को मिलेगा जिसमें आप बीते युग की कलाकृतियों, चित्रों, कला और शिल्प का शानदार प्रदर्शन देख सकेगें।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग –

राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल में से एक चित्तौड़गढ़ दुर्ग चित्तौड़गढ़ जिला में स्थित है जिसका निर्माण 7 वीं शताब्दी ई में स्थानीय मौर्य शासकों द्वारा किया गया था जो भारत के सबसे बड़े किलों में से एक है। चित्तौड़गढ़ का दुर्ग इतिहास का एक खजाना है जो कई वीरता और बलिदान की कहानियों के साथ यहां आज भी खड़ा हुआ है या कहाँ जाये तो सही अर्थों में यह दुर्ग राजपूत संस्कृति और मूल्यों को भी प्रदर्शित करता है। 15 वीं और 16 वीं शताब्दी के दौरान इस किले पर तीन बार कब्जा किया गया था। 1303 में अलाउद्दीन खिलजी ने राणा रतन सिंह को हराया था, 1535 में बहादुर शाह ने बिक्रमजीत सिंह को हराया और 1567 में अकबर ने महाराणा उदय सिंह द्वितीय को हराया। अपनी शानदार और आकर्षक दृश्य के कारण चित्तौड़गढ़ किले को साल 2013 में यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। चित्तौड़गढ़ किले को चित्तौड़ के नाम से जाना जाता है और यह 590 फीट की ऊँचाई पर एक पहाड़ी पर लगभग 700 एकड़ भूमि में फैला हुआ है।

जूनागढ़ किला –

राजस्थान के बीकानेर में स्थित जूनागढ़ किला एक बहुत ही खूबसूरत और शानदार संरचना है। राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक स्मारक में शामिल इस खूबसूरत महल को पहले "बीकानेर किले" के नाम से जाना-जाता था लेकिन फिर

		• कुंभा की विजयों की जानकारी
6. राज प्रशस्ति	1676 ईस्वी.	• राजसमंद झील के किनारे, नौ चौकी स्थान पर • संस्कृत भाषा में • विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति • रचियता – रणछोड़ तैलंग

☞ चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरू (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया** ।
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया** ।
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है ।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडा बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है ।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध'** (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मोहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मोहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मोहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था।

☞ **रणथम्भौर के चौहान**

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी –

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापतियों उलूग खां व नूसरत खां को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा था।

अध्याय – 5

राजस्थान का आधुनिक इतिहास

एक परिचय

- 1803 ई. में राजस्थान में अलवर तथा भरतपुर रियासतों ने अंग्रेजों के साथ संधियां की।
- 1803 ई. में अंग्रेजों का गवर्नर जनरल या ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलेजली (Lord Wellesley) था।
- 1817 ई. में राजस्थान में करौली व कोटा रियासतों ने अंग्रेजों के साथ संधियां की।
- 1818 ई. में राजस्थान की अन्य रियासते अंग्रेजों के साथ संधियां करती है।
- 1823 ई. में राजस्थान में सिरोही रियासत अंग्रेजों से साथ संधि करती है।
- सिरोही रियासत राजस्थान की अंतिम रियासत थी जिसने अंग्रेजों के साथ संधि की थी। अर्थात् अंग्रेजों के साथ संधि करने वाली राजस्थान की अंतिम रियासत सिरोही थी।
- 1823 ई. में अंग्रेजों का गवर्नर जनरल या ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स (Lord Hastings) था।
- राजस्थान की इन संधियों से दौरान चार्ल्स मेटकॉफ (Charles Metcalfe) अंग्रेजों का प्रतिनिधि था। लेकिन दक्षिण राजस्थान (डुंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा) की रियासतों के साथ संधि के दौरान अंग्रेजों का प्रतिनिधि जॉन मेल्कम (John Malcom) था। अर्थात् जॉन मेल्कम ने संधियों पर हस्ताक्षर किये थे।
- प्रत्येक रियासत में एक अंग्रेज अधिकारी नियुक्त किया जाता था जिसे पॉलिटिकल एजेन्ट (Political Agent) या रेजीडेंट कहा जाता था।
- 1832 ई. में राजस्थान के अजमेर में A.G.G. मुख्यालय बनाया गया था।
- अब्राहम लॉकेट (Abraham Locket) राजस्थान का पहला A.G.G. था।
- अब्राहम लॉकेट को 1832 ई. में राजस्थान का A.G.G. बनाया गया था।
- 1845 ई. में आबू में A.G.G. मुख्यालय स्थापित किया गया था।
- 1864 ई. में आबू तथा अजमेर में 6-6 माह का प्रावधान किया गया। अर्थात् A.G.G. का मुख्यालय 6 माह आबू रहेगा तथा 6 माह अजमेर रहेगा।
- आबू राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।
- A.G.G. Full Form = Agent to Governor General

डेविड ऑक्टरलोनी (David Ochterlony)-

- डेविड ऑक्टरलोनी राजपूताना का प्रथम पॉलिटिकल एजेन्ट (Political Agent) या रेजीडेंट था अर्थात् राजपूताने का प्रथम पॉलिटिकल एजेंट था तथा दिल्ली इसका मुख्यालय था।
- मुगल बादशाह ने डेविड ऑक्टरलोनी को नसीर-ए-दिल्ली की उपाधी दी थी।

राजस्थान में 1857 ई. की क्रांति

- 1857 ई. की क्रांति के दौरान जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स (George Patrick Lawrence) राजस्थान का A.G.G.था।
- 1857 ई. की क्रांति के दौरान राजस्थान में अंग्रेजों की 6 सैनिक छावनियां (Cantonments) थी। जैसे-

1. नसीराबाद छावनी (Naseerabad Cantonment)- अजमेर
2. नीमच छावनी (Neemuch Cantonment)- मध्य प्रदेश
3. देवली छावनी (Deoli Cantonment)- टोंक
4. एरिनपुरा छावनी (Erinpura Cantonment)- पाली
5. ब्यावर छावनी (Beawar Cantonment)- अजमेर
6. खैरवाडा छावनी (Khriwara Cantonment)- उदयपुर

- ब्यावर तथा खैरवाडा छावनी के सैनिकों ने 1857 ई. की क्रांति में भाग नहीं लिया था।

1. नसीराबाद छावनी (Naseerabad Cantonment)-

- **स्थित-** अजमेर जिला, राजस्थान
- 28 मई 1857 को 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री (15th Bengal Native Infantry) के सैनिकों ने 1857 ई. की क्रांति की शुरुआत की थी।
- नसीराबाद छावनी में क्रांति के दौरान दो अंग्रेज अधिकारी मार दिए गये थे। जैसे-
  (I) कर्नल न्यूबेरी (Colonel Newberry)
  (II) कैप्टन स्पोसीवुड (Captain Spotiswood)
- कर्नल पेनी (Colonel Penny) की हृदय घात से मृत्यु हो गई थी।
- दो अंग्रेज अधिकारी घायल हो गये थे। जैसे-
  (I) लेफ्टिनेंट लोक (Lieutenant Lock)
  (II) कैप्टन हार्डी (Captain Hardy)
- 30वीं नेटिव इन्फेंट्री (30th Native Infantry) के सैनिक भी 1857 ई. की क्रांति में शामिल हो गये तथा सभी विद्रोही दिल्ली की तरफ चले गये।

2. नीमच छावनी (Neemuch Cantonment)-

- **स्थित-** मध्य प्रदेश
- मोहम्मद अली बेग (Mohammad Ali Beg) नामक सैनिक ने कर्नल एबॉट (Colonel Abott) के सामने अंग्रेजों के प्रति वफादारी की प्रतिज्ञा करने से मना कर दिया था।
- 3 जून 1857 ई. को नीमच छावनी में हीरासिंह के नेतृत्व में सैनिकों ने क्रांति कर दी।
- शाहपुर रियासत (भीलवाड़ा) के राजा लक्ष्मण सिंह ने विद्रोहियों (सैनिकों) का समर्थन किया।

- देवली छावनि के महीदपुर बटालियन (Battalion) के सैनिक क्रांति में शामिल हो गये तथा सभी विद्रोही दिल्ली की तरफ चले गये।
- 40 अंग्रेज नीमच छावनी के भाग गए थे।
- डूंगला (Doongala) नामक गाँव में रूघाराम (Rugharam) नामक किसान ने इन 40 अंग्रेजों को शरण दी।
- डूंगला गाँव राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
- मेवाड़ का पॉलिटिकल एजेंट (Political Agent) शॉवर्स (Shawers) इन 40 अंग्रेजों को उदयपुर लेकर आया। जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह (Swaroop Singh) ने इन 40 अंग्रेजों को जगमंदिर महल में रखा।

3. देवली छावनी (Deoli Cantonment)-

- **स्थित-** टोंक जिला, राजस्थान
- देवली छावनी के महिदपुर बटालियन (Mahidpur Battalion) के सैनिक 1857 ई. की क्रांति में शामिल हो गये तथा सभी विद्रोही दिल्ली की तरफ चले गये।

4. एरिनपुरा छावनी (Erinpura Cantonment)-

- **स्थित-** पाली जिला, राजस्थान (पाली सिरोही सीमा पर)
- 21 अगस्त 1857 ई. को पूर्बिया (Purbiya) सैनिकों ने आबू में क्रांति कर दी।
- पूर्बिया सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारी हॉल (Hall) के घर पर हमला कर दिया था।
- पूर्बिया सैनिकों ने एरिनपुरा से अपने बाकी साथियों को लिया तथा दिल्ली की तरफ जाने का प्रयास किया।
- खैरवा (Khairawa) नामक स्थान पर विद्रोहियों की मुलाकात आउवा के सामंत कुशाल सिंह चाम्पावत (Kushal Singh Champawat) से हुई तथा कुशाल सिंह ने इन्हें नेतृत्व प्रदान किया।
- आउव मारवाड़ रियासत में प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।
- इस समय मारवाड़ रियासत का राजा तख्त सिंह था।
- खैरवा नामक स्थान राजस्थान के पाली जिले में स्थित है।
- आउवा नामक स्थान राजस्थान के पाली जिले में स्थित है।

बिठौंडा का युद्ध (Battle of Bithaura)- 8 सितम्बर 1857 ई.

- **स्थान-** बिठौंड़ा, पाली जिला, राजस्थान
- **दिन-** 8 सितम्बर 1857 ई.
- **मध्य-** कैप्टन हीथकोट + कुशलराज सिंघवी (✗) व कुशाल सिंह चाम्पावत (✓)
- बिठौंडा के युद्ध में अंग्रेजों की तरफ से कैप्टन हीथकोट ने भाग लिया था।
- बिठौंडा के युद्ध में जोधपुर की तरफ से कुशलराज सिंघवी ने भाग लिया था।
- बिठौंड़ा के युद्ध में कुशाल सिंह चाम्पावत (Kushal Singh Champawat) की जीत हुई।
- बिठौंड़ा के युद्ध में कुशाल सिंह चाम्पावत एरिनपुरा छावनी के सैनिकों को लेकर लड़ता है।
- बिठौंड़ा के युद्ध में जोधपुर का सैनापति ओनाड सिंह पंवार (Onar Singh Panwar) लड़ता हुआ मारा गया था।

चेलावास का युद्ध (Battle of Chelavas)- 18 सितम्बर 1857 ई.

- **स्थान-** चेलावास, पाली जिला, राजस्थान
- **दिन-** 18 सितम्बर 1857 ई.
- **मध्य-** जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स (A.G.G) + मैकमेसन (पॉलिटिकल एजेंट) (✗) व कुशाल सिंह चाम्पावत (✓)
- चेलावास के युद्ध में कुशाल सिंह चाम्पावत एरिनपुरा छावनी के सैनिकों को लेकर लड़ रहा था।
- चेलावास के युद्ध को काले गोरो के बीच का युद्ध कहा जाता है। या काले गोरो का युद्ध भी कहते हैं।
- चेलावास के युद्ध में भी कुशाल सिंह चाम्पावत की जीत हुई।
- चेलावास युद्ध में मैकमेसन को मार दिया गया था।
- राजस्थान के पाली जिले के चेलावास नामक स्थान पर मैकमेसन की समाधी स्थित है।
- चेलावास के युद्ध के बाद एरिनपुरा छावनी के सैनिक दिल्ली चले गए थे।

आउवा का युद्ध (Battle of Auwa)- 20 जनवरी 1858 ई.

- **स्थान-** आउवा, पाली जिला, राजस्थान
- **दिन-** 20 जनवरी 1858 ई.
- **मध्य-** कर्नल होम्स + हंसराज जोशी Vs कुशाल सिंह चाम्पावत
- आउवा के युद्ध में एरिनपुरा छावनी के सैनिक कुशाल सिंह के साथ नहीं थे अर्थात् सैनिक दिल्ली चले गये थे।
- सहायता प्राप्त करने के लिए कुशाल सिंह चाम्पावत मेवाड़ चले गये अतः पृथ्वी सिंह लाम्बिया (Prithvi Singh Lambiya) ने युद्ध का नेतृत्व किया।
- पृथ्वी सिंह लाम्बिया कुशाल सिंह चाम्पावत का छोटा भाई था।
- 24 जनवरी 1858 ई. को अंग्रेजों ने आउवा पर अधिकार कर लिया तथा सुगाली माता (Sugali Mata) की मूर्ति उठाकर ले गये।
- पृथ्वी सिंह लाम्बिया (Lambiya) के सामंत थे।
- लाम्बिया ठिकाना राजस्थान के पाली जिले में आउवा के पास स्थित है।
- आउवा के युद्ध में अंग्रेजों की तरफ से कर्नल होम्स ने भाग लिया।

- आउवा के युद्ध में जोधपुर की तरफ से हंसराज जोशी ने भाग लिया।
- सुगाली माता की मूर्ति एक काले संगमरमर की मूर्ति है जिसमें सुगाली माता के 10 सिर व 54 हाथ है।
- अंग्रेजों ने सुगाली माता की मूर्ति को अजमेर के राजपूताना म्यूजियम (Rajputana Museum) में रखा था। लेकिन कालांतर में सुगाली माता की मूर्ति को पाली के बांगड म्यूजियम में भेज दिया गया था।
- राजपूताना म्यूजियम राजस्थान के अजमेर जिले में अंग्रेजों के द्वारा बनवाया गया था।
- मेवाड़ में सलूम्बर के सामंत केसरी सिंह तथा कोठारिया के सामंत जोध सिंह (Jodh Singh) ने कुशाल सिंह चाम्पावत को शरण दी।
- सलूम्बर ठिकाना राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित है।
- कोठारिया ठिकाना राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित है।
- कोठारिया ठिकाना मेंवाड़ रियासत का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।
- 8 अगस्त 1860 ई. को नीमच में कुशाल सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया था।
- कुशाल सिंह का जाँच के लिए अंग्रेजों ने टेलर समिति (Taylor Commission) का गठन किया।
- कुशाल सिंह ने अपना अंतिम समय उदयपुर में बिताया था।
- 1864 ई. में उदयपुर में ही कुशाल सिंह की मृत्यु हो गई थी।
- मारवाड़ के अन्य सामंतों ने भी 1857 ई. की क्रांति में कुशाल सिंह चाम्पावत का साथ दिया था। जैसे-

  (I) शिवनाथ सिंह (Shivnath Singh)- आसोप का सामंत

  (II) बिशन सिंह (Bishan Singh)- गूलर का सामंत

  (III) अजीत सिंह (Ajeet Singh)- आलणियावास का सामंत
- आसोप राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित है।
- गूलर व आलणियावास राजस्थान के नागौर जिले में स्थित है।
- शिवनाथ सिंह आसोप के नेतृत्व में विद्रोहियों ने दिल्ली की तरफ जाने का प्रयास किया था। लेकिन नारनौल (हरियाणा) के पास वे अंग्रेज अधिकारी गेरार्ड (Gerarda) से हार गये थे।
- बडलू नामक स्थान पर शिवनाथ सिंह ने 35 दिनों तक अंग्रेजों का सामना किया था।
- बडलू राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित जगह का नाम है।
- बडलू का युद्ध अंग्रेजों तथा शिवनाथ सिंह के मध्य लड़ा गया था।
- आउवा में 1857 ई. की क्रांति के दो केंद्र थे। जैसे-

(I) सुगाली माता मंदिर- आउवा, पाली जिला, राजस्थान

(II) कामेश्वर मंदिर- आउवा, पाली जिला, राजस्थान (शिव मंदिर)

<u>तख्त सिंह (Takhta Singh)-</u>

- 1857 ई. की क्रांति के दौरान तख्त सिंह मारवाड़ का राजा था।

<u>कानजी (Kanji)-</u>

- कानजी बिठौड़ा (Bithaura) का सामंत था। लेकन कुशाल सिंह ने इसकी हत्या कर दी थी।

<u>5. ब्यावर छावनी (Beawar Cantonment)-</u>

- **स्थित-** अजमेर जिला, राजस्थान
- ब्यावर छावनी के सैनिकों ने 1857 ई. की क्रांति में भाग नहीं लिया था।

<u>6. खैरवाडा छावनी (Khriwara Cantonment)-</u>

- **स्थित-** उदयपुर जिला, राजस्थान
- खैरवाडा छावनी के सैनिकों ने 1857 ई. की क्रांति में भाग नहीं लिया था।

<u>कोटा का जन विद्रोह या कोटा में 1857 ई. की क्रांति- 15 अक्टूबर 1857 ई.</u>

- **स्थान-** कोटा जिला, राजस्थान
- **दिन-** 15 अक्टूबर 1857 ई.
- कोटा जन विद्रोह के दौरान मुख्य विद्रोही (Rebels) निम्नलिखित थे।

  (I) वकील जयदयाल (मथुरा)

  (II) रिसालदार मेहराब खान (करौली)
- कोटा जन विद्रोह के दौरान कोटा का पॉलिटिकल एजेंट बर्टन (Burton) था।
- कोटा जन विद्रोह के दौरान कोटा का राजा महाराव रामसिंह-2 था।
- विद्रोहियों ने महाराव रामसिंह-2 को नजरबंद कर दिया गया तथा पोलिटिकल एजेंट बर्टन व उसके कुछ साथियों को भी मार दिया गया था। जैसे-

  (I) फ्रेंक (Frank)- बर्टन का बेटा

  (II) आर्थर (Arthur)- बर्टन का बेटा

  (III) सेडलर (Sedlor)- डॉ.

  (IV) सेविल कॉटेम (Sevil Contom)- डॉ.

  (V) देवीलाल (Devilal)- महाराव रामसिंह-2 का प्रतिनिधि
- मथुरेश जी मंदिर के महंत कन्हैयालाल गोस्वामी ने राजा तथा विद्रोहियों के बीच एक समझौता करवाया।
- इस समझौते में 9 शर्ते रखी गई थी।
- इस समझौते के तहत बर्टन की हत्या की जिम्मेदारी महाराव रामसिंह-2 पर डाल दी गई।
- करौली के राजा मदनपाल (Madanpal) ने महाराव रामसिंह-2 को मुक्त करवाया।

18.	डूंगरपुर प्रजामण्डल	1944	भोगीलाल पण्ड्या	भोगीलाल पण्ड्या	शिवलाल कोटड़िया, हरिदेव जोशी, गौरीशंकर उपाध्याय
19.	बूँदी राज्य लोक परिषद	1944	मेहता	हरिमोहन माथुर	नित्यानन्द नागर, गोपाल कोटिया, गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल, पूनमचन्द
20.	बाँसवाड़ा प्रजामण्डल	1945	भूपेन्द्र त्रिवेदी	भूपेन्द्र त्रिवेदी	धूलजी भाई, मणिशंकर, चिमनलाल, मोतीलाल, लक्ष्मणदास
21.	प्रतापगढ़ प्रजामण्डल	1945	अमृतलाल पायक	अमृतलाल पायक	चुन्नीलाल प्रभाकर एवं अन्य साथी
22.	झालावाड़ 'प्रजामण्डल	1946	मांगीलाल	मांगीलाल	कन्हैया लाल मित्तल, मकबूल आलम और तनसुखलाल, रामनिवास शर्मा मदनगोपाल, रतनलाल,

❖ **प्रजामंडल आंदोलन के सामाजिक प्रभाव :**

- देशी रियासतों में नागरिक अधिकारों की बहाली, उत्तरदायी शासन की स्थापना एवं राजनीतिक आंदोलन को समन्वित रूप देने के लिए अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की प्रांतीय शाखाओं के रूप में रियासतों में जो राजनीतिक संगठन स्थापित हुए, वे प्रजामण्डल कहलाए। इन प्रजामण्डल आंदोलनों में राजनीतिक आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अत्यंत सराहनीय कार्य किये, जो निम्न हैं:
- राजस्थान की महिलाओं में प्रजामण्डल में सक्रिय रूप से भाग लिया बाँसवाड़ा में श्रीमति जिया बहन, मारवाड़ में महिमा देवी किंकर, रमादेवी, कृष्णा कुमारी, जयपुर में दुर्गादेवी शर्मा, मेवाड़ में नारायणी देवी एवं उनकी पुत्री आदि के नेतृत्व में जगह-जगह महिला मंडल बने। महिलाओं ने भारत छोड़ो आंदोलन, सामाजिक सुधारों, धरना देने आदि में बढ़-चढ़कर भाग लिया एवं बड़े स्तर पर गिरफ्तारियाँ दीं। इस आंदोलन की यह एक सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि महिलाओं को चारदीवारी से बाहर निकालकर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा कर दिया।
- प्रजामण्डल के दौरान सभी जगह छुआ-छूत, ऊँच-नीच आदि के भेदभाव को मिटाया गया तथा दलितों को भी आंदोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित किया गया। अलवर में पं. हरिनारायण ने अस्पृश्यता निवारण संघ, वाल्मीकि संघ, गोकुल भाई भट्ट ने 'हरिजन तथा संघ, भोगीलाल पेड़मा ने ' हरिजन समिति, रामनारायण चौधरी ने 'राजपुताना हरिजन सेवा संघ 'आदि अनेक दलितोत्थान संस्थाएँ स्थापित की।
- प्रजामंडल आंदोलनों का एक सबसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक कार्य जनसामान्य की शिक्षा का प्रचार-प्रसार रहा। इनके द्वारा जगह-जगह रात्रि पाठशालाएँ तथा गाँव-गाँव व शहर-- शहर में अनेक पाठशालाएँ, दलितों के लिए' कबीर पाठशालाएँ 'खोली गई। प्रजामंडलो ने सभी नगरों व कस्बों में पुस्तकालय, वाचनालए स्थापित कर संचालित किए।
- मेवाड़ प्रजामंडल मे बेगार प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाकर इसके लिए विशेष कानून बनवाए। मारवाड़ में जयनारायण व्यास, हाड़ौती में पे नयनूराम शर्मा, बागड़ में भोगीलाल पंड्या, गोकुल भाई भट्ट जैसे नेताओं ने बेगार प्रथा के विरुद्ध आंदोलन चलाकर इसे समाप्त करने का प्रयास किया।
- प्रजामंडल आंदोलनों के सामाजिक प्रभावों ने जातीय एवं धार्मिक वैमनस्य को मिटाया। सभी को समानता एवं भाईचारे का पक्का पाठ पढ़ाया, क्योंकि सभी की एक समान समस्या थी- निरंकुश सामंतशाही । इसलिए इस आंदोलन में हिन्दू-मुस्लिम एवं सभी वर्गों व जातियों ने एक साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

RAS MAINS में प्रश्न पूछे गए प्रश्न व संभावित :-

प्रश्न-1. जयपुर के प्रजामंडल का 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के प्रति क्या दृष्टिकोण था ? (15 शब्द) **RAS (mains) 2018**

प्रश्न-2. मेवाड़ प्रणामंडल की स्थापना किसने और कब की? (15 शब्द)

प्रश्न-3. मारवाड़ प्रजामंडल को समझाइये ? (50 शब्द)

प्रश्न-4. प्रजामंडल आंदोलन के सामाजिक प्रभावों का उल्लेख कीजिए ? - (100 शब्द)

प्रश्न-5. राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलन की मूलभूत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (100 शब्द) **RAS (mains) 2016**

एकीकरण के चरण

(i) प्रथम चरण –

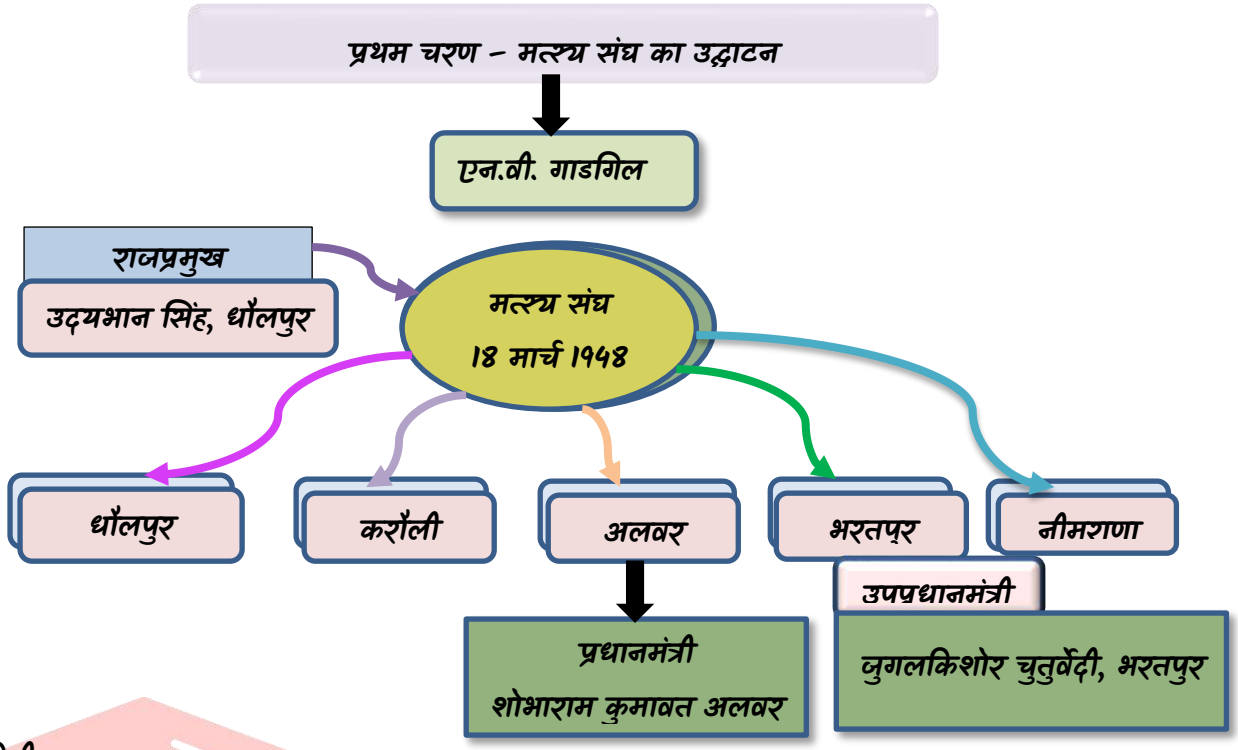

(ii) द्वितीय चरण –

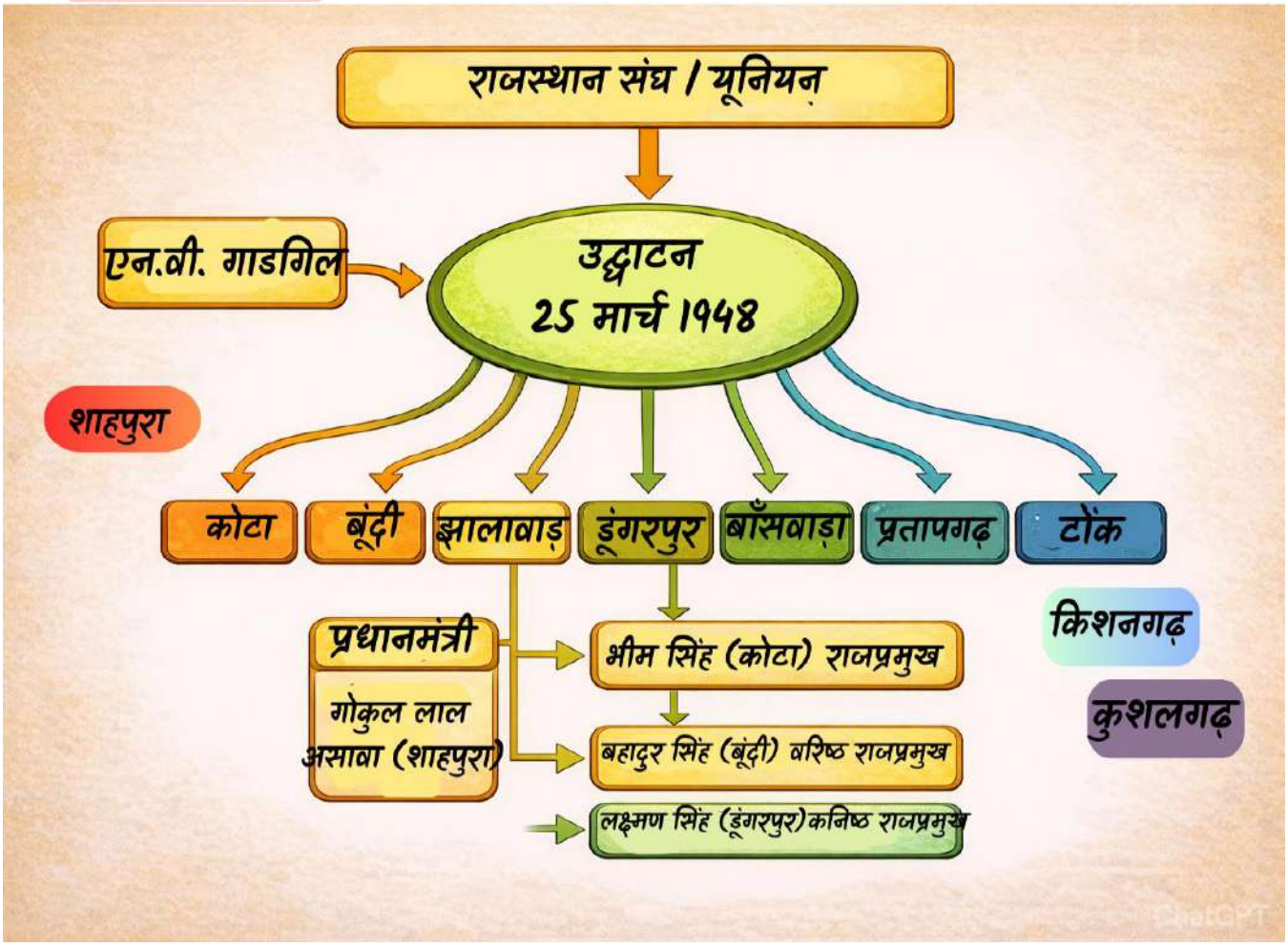

कला एवं संस्कृति

अध्याय – I

राजस्थान की वास्तु परम्परा

मंदिर :-

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।

राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(1.) नागर या आर्य शैली-

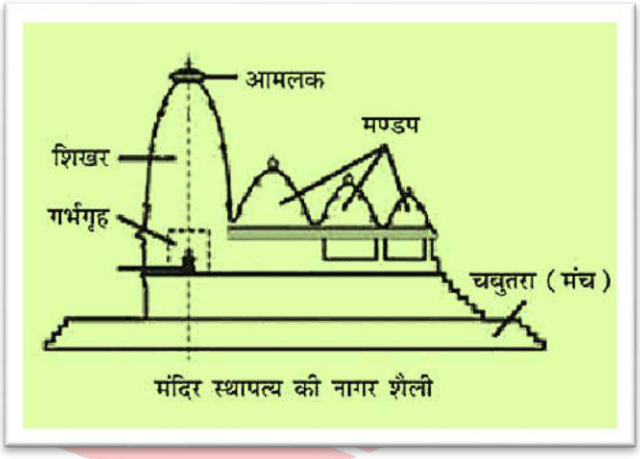

मंदिर स्थापत्य की नागर शैली

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण)।

(2.) भूमिज शैली

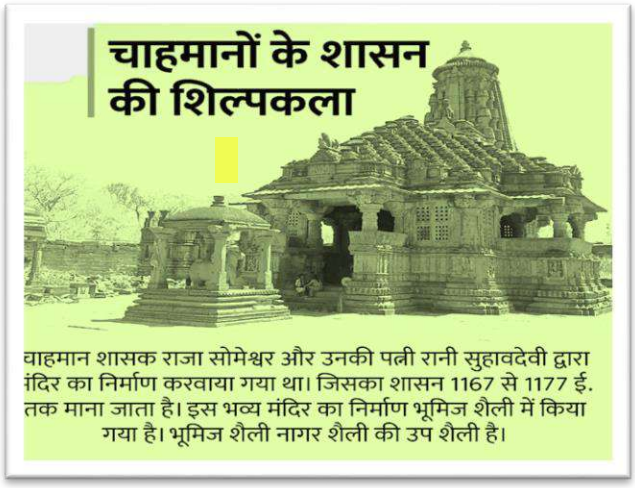

वाहमान शासक राजा सोमेश्वर और उनकी पत्नी रानी सुहावदेवी द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया था। जिसका शासन 1167 से 1177 ई. तक माना जाता है। इस भव्य मंदिर का निर्माण भूमिज शैली में किया गया है। भूमिज शैली नागर शैली की उप शैली है।

- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- उदयेश्वर महादेव मंदिर, उदयपुर (म.प्र.)
- निलकंठेश्वर मंदिर, उदयपुर (म.प्र.)
- कुंभलगढ़ व आसपास के कुछ मंदिर (राजस्थान)
- **भूमिज शैली (Bhumija Style)**
  यह भारतीय नागर (North Indian) मंदिर स्थापत्य की एक प्रमुख उप-शैली है, जो विशेष रूप से **मध्य भारत (मालवा, बुंदेलखंड, राजस्थान-गुजरात का कुछ भाग)** में विकसित हुई।
- **भूमिज शैली की मुख्य विशेषताएँ**
- **शिखर (Tower)**
  शिखर **ऊँचा और घुमावदार (curvilinear)** होता है। इसमें अनेक **छोटे-छोटे उप-शिखर (miniature spires)** एक निश्चित ज्यामितीय क्रम में लगे होते हैं।
  ज्यामितीय विन्यास
  शिखर पर **क्षैतिज व ऊर्ध्वाधर रेखाओं** का जाल (grid pattern) बनता है।
  यह इसे नागर शैली से अलग पहचान देता है।
  मूल आधार
  मंदिर का गर्भगृह प्रायः **चौकोर या ताराकार (stellate)** योजना पर आधारित होता है।
  अलंकरण
  दीवारों पर **सूक्ष्म मूर्तिकारी और रेखात्मक सजावट** पाई जाती है।
  अलंकरण अपेक्षाकृत संतुलित और ज्यामितीय होता है।
  क्षेत्रीय प्रसार
  यह शैली विशेष रूप से **मालवा (मध्य प्रदेश)** और उससे जुड़े क्षेत्रों में लोकप्रिय रही।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजोलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (भैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई. अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

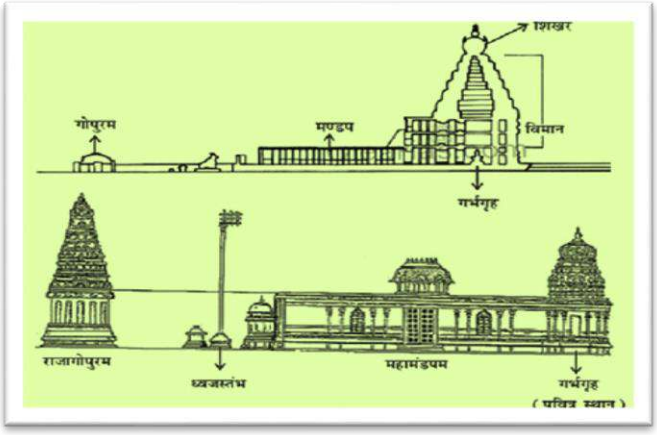

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।
- सभा, नृत्य, पूजा आदि के लिए **विभिन्न मंडप** बनाए जाते हैं।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़), हर्षनाथ मंदिर (सीकर)

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते हैं।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते है तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर), खजुराहो का **कंदारिया महादेव मंदिर**।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर,अजमेर) बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चित्तौड़ गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया, जोधपुर ग्रामीण)

1. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर - प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए।
[RAS. 2016]

(1)आहड़ का आदिवराह मंदिर
(2)आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर
(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर
(4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर

कूट :
(a)1 , 2 , 3 और 4 (b)1 , 2 और 4
(c) 1 और 4 **(d)2 और 4**

❖ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

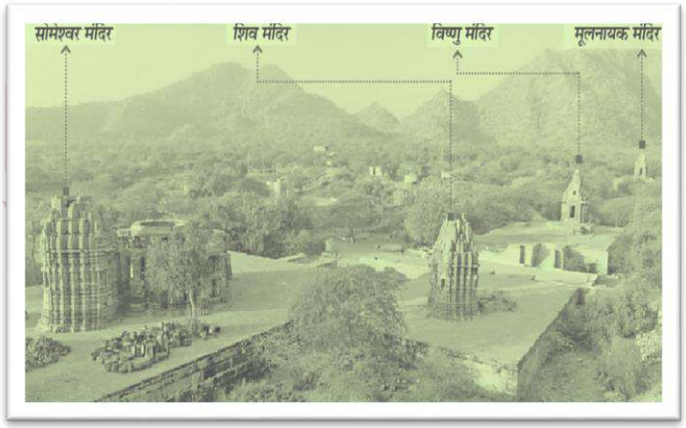

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते है। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

7. किस मंदिर को राजस्थान का मिनी माउंट आबू कहते हैं?

A. बिरला मंदिर जयपुर
B. लक्ष्मण जी मंदिर भरतपुर
C. हल्देश्वर महादेव मंदिर बाड़मेर
D. ब्रह्मा मंदिर पुष्कर **(C)**

8. शेर पर सवार गणेश जी की मूर्ति किस मंदिर में है?

A. बाजना गणेश मंदिर
B. त्रिनेत्र गणेश जी मंदिर
C. हैरम्ब गणपति मंदिर
D. द्वारकाधीश मंदिर **(C)**

- **राजस्थान की मस्जिदें , दरगाह एवं मक़बरे**

❖ **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर)**

- शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की मुख्य मजार का निर्माण 1537 ई. में मांडू के सुल्तान ग्यासुद्दीन खिलजी ने करवाया था।
- इतिहासकार हरविलास शारदा के अनुसार ख्वाजा साहब की पक्की मजार 1464 ई . में बनवायी गयी जब अजमेर मालवा के सुल्तान मोहम्मद खिलजी के अधिकार में था।
- दरगाह में 75 फीट ऊँचा बुलन्द दरवाजा है।
- यहाँ अकबरी मस्जिद स्थित है।
- यहाँ दो बड़ी देग रखी हैं इनमें बड़ी देग बादशाह अकबर द्वारा (1567 ई.) और छोटी देग बादशाह जहाँगीर (1613 ई.) द्वारा भेंट की गई।
- दरगाह का मुख्य प्रवेश द्वार निजाम द्वार है जिसका निर्माण हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली के द्वारा करवाया गया था।
- इसके ऊपर जो दो नगाड़े रखे हुए हैं उन्हें मुगल सम्राट अकबर ने भेंट किए थे।
- महफिल खाना का निर्माण बशीरुद्दौला द्वारा 1888 ई . में करवाया गया था। यहाँ उर्स के मौके पर कव्वाली गाई जाती है।
- अजमेर यहाँ बेगमी दालान है जिसका निर्माण बादशाह शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा द्वारा करवाया गया ।
- मुख्य मजार के चारों ओर चाँदी का कटहरा सवाई जयसिंह ने बनवाया।
- यहाँ पर अनेक लोगों की कब्रगाह है जिनमें ख्वाजा साहब की पुत्री बीबी हाफिज जमाल, ख्वाजा मुइनुद्दीन के दो पोते, माण्डू के सुल्तान तथा भिश्ती निजामुद्दीन सिक्का की कब्रे मौजूद हैं।

❖ **हजरत शकर पीर बाबा की दरगाह (नरहड़, झुंझुनू)**

- यह राजस्थान की सबसे बड़ी दरगाह है।
- इन्हें बांगड़ के धणी, नरहड़ के पीर कहते हैं।
- प्रतिवर्ष जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) को उर्स भरता है।
- मानसिक विकलांग लोगों के मिट्टी रगड़ने से आराम मिलता है।
- यह दरगाह सांप्रदायिक सौहार्द्ध का अनूठा उदाहरण है।
- फतेहपुर सीकरी के सलीम चिश्ती शक्कर पीर बाबा के ही शिष्य थे।
- इस में तीन प्रवेश द्वार हैं- (1) बुलंद दरवाजा (2) बसेती दरवाजा (3) बगली दरवाजा

❖ **शेख हमीमुद्दीन नागौरी की दरगाह (नागौर)**

- इन्हें सुल्तान - ए – तारकीन कहा जाता है।
- सुल्तान - ए - तारकीन साहब की दरगाह नागौर में गिनाणी तालाब के पास स्थित है।
- ये ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।
- 1274 ई . में नागौर में इंतकाल हो गया।
- यहाँ अजमेर के बाद दूसरा सबसे बड़ा उर्स भरता है।

राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ

❖ जब भी किसी राजा, रानी या प्रतिष्ठित महिला-पुरुष की मौत हो जाती थी तो उसकी याद अमर रखने के लिए छतरी और देवल आदि बना दिए जाते थे। इसके पीछे धारणा यह रही है कि उसके व्यक्तित्व, कृतित्व और स्मृति का संदेश आम आदमी तक पहुंचे।

प्रमुख राजवंशो की छत्तरियाँ

❖ **गैटोर की छत्तरियाँ**

- यहाँ पर जयपुर के शासकों की छत्तरियाँ है।
- सवाई जयसिंह से लेकर माधोसिंह द्वितीय तक।
- ईश्वरी सिंह की छतरी यहाँ स्थित नहीं है, ईश्वरी सिंह की छत्तरी 'ईसरलाट' के पास ही है।
- इन छतरियों में सवाई जयसिंह की छतरी सबसे सुन्दर है। जिसकी एक प्रतिलिपी लंदन के केनसिंगल म्यूजियम में रखी गई है ।

❖ **आहड़ की छत्तरियाँ**

- यहाँ पर मेवाड़ के शासकों की छत्तरियाँ है।
- सबसे पहले यहाँ अमरसिंह प्रथम की छत्तरी बनायी गयी थी।
- इस स्थान को 'महासतियाँ कहते है।

❖ **पंचकुण्ड की छतरियाँ (मण्डोर)**

- जोधपुर महारानियों की छतरियाँ है जिसमें मानसिंह की भटियानी रानी की छतरी, जोधपुर की महारानी कच्छवाही सूर्य कंवर (जयपुर नरेश प्रतापसिंह की पुत्री) जिनकी मृत्यु 28 जनवरी, 1826 ई. को हुई थी। इनकी स्मृति में बनाई गई छतरी स्थापत्य कला की दृष्टि से बहुत सुन्दर है। छतरी में 32 खंबे लगे होने के साथ ही बीचों-बीच छोटी संगमरमर की सफेद छतरी बनाकर उसमें चरण चिन्ह शिलालेख के साथ अंकित किए गए हैं।
- यहाँ स्थित 46 छतरियाँ पुरातात्विक एवं स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- **राजा बख्तावर की छतरी (मंडोर, जोधपुर)** माना जाता है कि अलवर शासक बख्तावर सिंह जयपुर के जगतसिंह के साथ जोधपुर के मानसिंह के विरुद्ध लड़ने गये थे मंडोर (जोधपुर) में वीरगति को प्राप्त हो गये ।

❖ **कागा की छतरी**

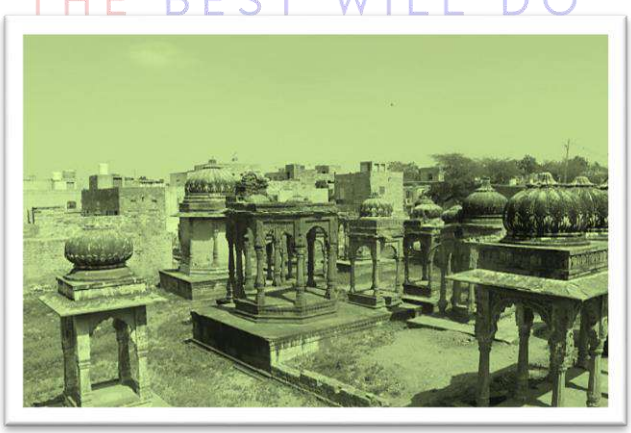

- यह छतरी ऋषि श्रेष्ठ काग भुशुण्दि की तपोभूमि में बनी।
- यहाँ भगवती गंगा भी ऋषि के तप से प्रकट हुई थी।
- कागा की छतरी में शीतला देवी का मंदिर है। इसका निर्माण जोधपुर नरेश विनयसिंह ने करवाया था।
- कागा की छतरियों के पास महाराजा जसवंत सिंह के काल में बक नामक जादूगर द्वारा एक दिन में लगाया गया अनार का बगीचा है।
- जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के प्रधानमंत्री राजसिंह चम्पावत की 18 खम्भों की छत्तरी बनी है।

❖ **जसवन्त थड़ा** (मेहरानगढ़ किले के पास) जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह द्वितीय का स्मारक, इसका

- **हींडा** - यह गीत सहरिया जनजाति में दीपावली के अवसर पर गाया जाता है ।
- **लहंगी** - यह गीत जनजाति के द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाता है ।
- **आल्हा**- यह गीत सहरिया जनजाति के द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाता है ।
- **चौंबाली**-राजस्थानी लोकगीतों का संस्मरण चौंबाली कहलाता है ।
- **रामदेवजी के गीत** - लोकदेवताओं में सबसे लम्बे गीत **रामदेवजी** के गीत हैं ।

अभ्यास प्रश्न

1. विख्यात गजल गायक जगजीत सिंह का पैतृक निवास कौनसा था?
(A) श्रीगंगानगर (B) बीकानेर
(C) जयपुर (D) डूगरपुर **(A)**

2. लोक गीत किसी संस्कृति के मुँह बोले चित्र हैं। यह किसका कथन हैं?
(A) विश्वमोहन (B) देवेन्द्र सत्यार्थी
(C) कोमल कोठारी (D) आनन्द कुमार स्वामी **(B)**

3. मूमल क्या है
(A) लोक गीत (B) राज्य गीत
(C) भक्ति गीत (D) हरजस गीत **(A)**

4. 'सारंग ' संगीत किस समय गाया जाता हैं?
(A) सुबह (B) दोपहर काल
(C) साय (D) रात्र में **(B)**

5. राजस्थान का एक लोकगीत जिसमें.....को विरहणियों का पक्षी कहा गया है
(A) पीपली (B) लावणी
(C) पपैया (D) कुरजां गीत **(D)**

6. निम्न में से कौनसी माण्ड गायिका बीकानेर से सम्बंधित नहीं हैं?
(A) गवरी देवी
(B) हाजन अल्लाह जिलाई बाई
(C) बन्नो बेगम
(D) इनमें से कोई नहीं **(C)**

7. 'म्हारी बरसाले री मूमल, हालैनी ऐ आलीजे रे देख' नामक लोकगीत किस क्षेत्र का है ?
(A) जोधपुर (B) बीकानेर
(C) जैसलमेर (D) सिरोही **(C)**

8. सूबटिया लोकगीत का सम्बन्ध किससे हैं?
(a) गरासिया स्त्री से (b) सती स्त्री से
(c) वीरांगना स्त्री से (d) भील स्त्री से
(D)

9."लांगुरिया गीत" का सम्बन्ध है?
(A) शिला देवी (B) करणी माता
(C) राणी सती (D) कैलादेवी **(D)**

10. बारात को भोजन कराते समय गालियों के रूप में गाए जाने वाले गीत
(A) कुकडलू (B) सीठणे
(C) घोड़ी (D) तोरण **(B)**

राजस्थान के प्रमुख नृत्य

❖ शास्त्रीय नृत्य

- राजस्थान का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ' कथक ' हैं ।
- कथक नृत्य के प्रवर्तक भानुजी को माना जाता हैं।
- जयपुर घराना कथक नृत्य का आदिम घराना हैं।
- वर्तमान में कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य हैं कथक नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बिरजू महाराज हैं।
- अन्य कलाकार प्रेरणा श्रीमाली , उदयशंकर ।

❖ लोकनृत्य

- लोकनृत्य वह कला हैं, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त करना एवं आनंद व उमंग से भरकर सामूहिक रूप से किए जाने वाले नृत्य ही लोकनृत्य कहलाते हैं।

राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया हैं ।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **जातीय नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य

❖ घूमर

- 'घूमर' शब्द की उत्पत्ति 'घुम्म' से हुई हैं, जिसका अर्थ होता हैं, ' लहंगे का घेर ' ।
- घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर 'घूमर लोकगीत' की धुन पर नाचती हैं ।
- घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती हैं, जिसे सवाई कहते हैं ।
- घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती हैं ।
- यह राजस्थान का राजकीय नृत्य हैं ।
- यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता हैं ।
- राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका ' घुमर 'नृत्य राजस्थान के' लोकनृत्यों की आत्मा ' कहलाता हैं।
- इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य , रजवाड़ी नृत्य, महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं ।
- यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता हैं ।

- *घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता है।*
- *झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता है।*

❖ ***झूमर नृत्य***

- *हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता है।*

❖ ***घुमरा नृत्य***

- *इसे भील जनजाति की महिला करती है।*
- *यह गरबा जैसा होता है।*
- *यह मांगलिक अवसर पर किया जाता है ।*
- *यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती हैं ।*
- *इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता है तथा दूसरा नाचता है।*

❖ ***घूमर-घूमरा नृत्य***

- *घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य है।*
- *जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता है ।*

❖ ***ढोल नृत्य***

- *राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।*
- *इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता है।*
- *यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है।*
- *इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं।*
- *ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।*

❖ ***घुड़ला नृत्य***

- *घुड़ला नृत्य विशेष रूप से जोधपुर जिले में किया जाता है ।*
- *घुड़ला नृत्य युवतियों के द्वारा किया जाता है ।*
- *घुड़ला नृत्य में स्त्रियाँ सुंदर श्रृंगार करके गोलाकार पथ पर नृत्य करती है ।*
- *घुड़ला नृत्य करते समय महिलाओं के सिर पर छिद्रित मटके रखे होते है । जिनमें जलता हुआ दीपक रखा जाता है । इस मटके को ही घुड़ला कहते हैं ।*
- *शीतला अष्टमी (चैत्र कृष्णा -8) पर घुडले का त्यौहार मनाया जाता है ।*
- *यह नृत्य जोधपुर के राव सातल देव की वीरता की याद में किया जाता है। उन्होंने 1492 में अजमेर के सूबेदार मल्लू खां के सेनापति **घुड़ले खां** को पराजित कर, उसके द्वारा अपहृत 140 कन्याओं को मुक्त कराया था।*
- *छिद्रित मटका घुड़ले खां के तीरों से बिंधे हुए सिर का प्रतीक माना जाता है।*
- *यह नृत्य दिन में नहीं अपितु रात्रि में किया जाता है ।*

❖ ***<u>डांडिया नृत्य</u>***

- *यह मारवाड़ का प्रतिनिधि नृत्य है, जिसमें 10 – 15 पुरुष विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में स्वांग भरकर गोले में डंडियों को आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।*
- *यह मूलत : गुजरात का है।*
- *राजस्थान में यह मारवाड़ का प्रसिद्ध है।*
- *यह होली के बाद खेलते हैं।*

अध्याय 6

भाषा एवं साहित्य

राजस्थान की बोलियाँ एवं साहित्य

राजस्थानी भाषा

- 'राजस्थान के लिए एक लोक कहावत प्रसिद्ध है कि- "पाँच कोस पर पानी बदले, सात कोस पर बाणी।"
- राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल 22 भाषाओं में शामिल नही क्या गया है । इस सम्बन्ध में सलाह देने हेतु केन्द्र सरकार ने हाल ही में एक समिति का गठन भी किया है।
- राजस्थानी भाषा राजस्थान मध्य भारत के पश्चिमी भाग, सिन्ध , पंजाब , हरियाणा के राजस्थान के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।
- 21 फरवरी को राजस्थानी भाषा दिवस तथा 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- वर्तमान में राजस्थानी भाषा बोलने वालों की संख्या 11-12 करोड़ से अधिक है।
- राजस्थानी भाषा का वक्ताओं की दृष्टि से भारत में 7वाँ स्थान तथा विश्व में 16वाँ स्थान है ।
- राजस्थान की राजभाषा हिन्दी है परन्तु यहाँ की मातृभाषा राजस्थानी है।
- भाषा विज्ञान के अनुसार राजस्थानी भाषा भारोपीय भाषा **(Indo-European)** परिवार के अंतर्गत आती है।
- राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण सन् 1912 ई. में सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक **"लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" (विषयक विश्व कोष)** में किया तथा सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द दिया।
- सन् 1914 से सन् 1918 के बीच इटली के विद्वान एल. पी. टेस्सी टोरी ने **"इण्डियन ऐन्टीक्वेरी"** नामक पत्रिका में राजस्थानी भाषा की उत्पति और विकास पर प्रकाश डाला ।
- राजस्थानी भाषा ' मुड़िया ' लिपि में लिखी जाती है।
- बिना मात्रा वाले महाजनी शब्द मोड़ कर लिखे जाते है जिन्हें मुड़िया अक्षर कहते है ।
- मुडिया अक्षर के आविष्कारक राजा टॉडरमल थे।
- प्राचीन समय में राजस्थान की भाषा को ' मरू ' भाषा के नाम से जाना जाता था ।
- जैन कवियों ने अपने ग्रन्थों की भाषा को मरू भाषा कहा है।
- मरू भाषा का सर्वप्रथम उल्लेख वि.सं. 835 में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित ' **कुवलयमाला** ' में वर्णित 18 देशी भाषाओं में किया गया जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा थी ।
- कवि कुशललाभ के ग्रन्थ **"पिंगल शिरोमणि"** तथा अबुल फजल के **"आईने अकबरी"** में **"मारवाड़ी शब्द"** का प्रयोग किया गया है
- 17वीं शताब्दी की ' नौबोली छंद ' तथा 18वीं शताब्दी की 'आठ देशरी गुजरी ' नामक रचनाओं में भी मरू भाषा का उल्लेख हुआ है ।
- राजस्थान की कुल बोलियों की संख्या 73 है ।
- राजस्थान के सबसे अधिक क्षेत्रफल में बोली जाने वाली भाषा मारवाड़ी है ।
- राजस्थान में जनसंख्या के आधार पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा ढूंढाड़ी है ।

❖ **राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति, उत्पत्ति काल व स्वतंत्रकाल**

उत्पत्ति -

- डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी व महावीर प्रसाद शर्मा राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति **शौरसेनी अपभ्रंश** से मानते है ।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मोनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **नागर अपभ्रंश** से मानते है ।
- के. एम. मुंशी एवं मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **गुर्जर अपभ्रंश** से मानते है।
- सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति सौराष्ट्री अपभ्रंश से हुआ।
- गुर्जरी अपभ्रंश से ऐतिहासिक , भौगोलिक एवं भाषा वैज्ञानिकी के आधार पर राजस्थानी भाषा की उत्पति मानी जाती है ।

राजस्थानी भाषा के दो साहित्यिक रूप हैं- 1. डिंगल 2. पिंगल

डिंगल	पिंगल
▪ यह पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है।	▪ पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है।
▪ इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ।	▪ इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ।
▪ इसका अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा लिखा गया।	▪ इसका अधिकांश साहित्य भाट कवियों द्वारा लिखा गया।
▪ यह मारवाड़ी मिश्रित राजस्थानी है।	▪ यह ब्रज मिश्रित राजस्थानी है।
▪ यह शैली गीत के रूप में है।	▪ यह शैली छंद एवं पदों (काव्य) में है।
▪ डिंगल की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जो शब्द जिस तरह बोला जाता है , ठीक उसी तरह लिखा जाता है ।	▪ इसके ग्रंथ- पृथ्वीराज रासौ , रतन रासौ , विजयपाल रासो , वंश भास्कर , खुमाण रासौ , राज विलास , पांडव दशेन्द्र चन्द्रिका , हम्मीर रासो व अवतार चरित्र ।
▪ इसके ग्रंथ- राजरूपक, वचनिका राठौड़, रतनसिंह, महेसदासौत री, अचलदास खींची री वचनिका, राव जैतसी रौ छंद, रुक्मणि हरण, नागदमण, सगतसिंह रासौ, ढोलामारू रा दूहा	
▪ डिंगल शैली के चार उपशैलियाँ हैं-	

(i)चारण शैली (ii)जैन शैली (iii) संत शैली (iv)लौकिक शैली ▪ डिंगल शैली का सर्वप्रथम प्रयोग कुशललाभ द्वारा रचित ' पिंगल - शिरोमणी (वि.सं. - 1607-08) ' नामक ग्रंथ में किया गया । ▪ 1871 में जोधपुर के कविराज बांकीदास की 'कुकवि बत्तीसी ' नामक रचना में डिंगल शब्द का प्रयोग प्रथम बार किया गया । ▪ रामकरण आसोपा ने डिंगल का शब्दकोष तैयार किया। राजस्थानी भाषा का पहला व्याकरण रामकरण आसोपा के द्वारा लिखा गया।	

❖ **उत्पत्ति काल**

- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति मोटे तौर पर विद्वानों ने 12वीं सदी के अंतिम चरण में माना है।
- क्योंकि 'भरतेश्वर बाहुबली घोर ' तथा ' भरतेश्वर बाहुबली घोष ' जैन रचनाएं इसी समय की लिखी हुई है ।
- डॉ . एल . पी . टेस्सीटोरी के अनुसार राजस्थानी भाषा 12वीं सदी में अस्तित्व में आ चुकी थी ।

साहित्यिक काल विभाजन:

- **प्राचीन काल (11वीं-15वीं शताब्दी):** जैन साहित्य और वीरगाथाओं का काल (उदा. 'पृथ्वीराज रासो')।
- **मध्य काल (16वीं-19वीं शताब्दी):** भक्ति और श्रृंगार रस का स्वर्ण युग (उदा. 'मीराबाई के पद', 'वेलि क्रिसन रुक्मणी री')।
- **आधुनिक काल (19वीं शताब्दी से अब तक):** सूर्यमल्ल मीसण को आधुनिक राजस्थानी साहित्य का जनक माना जाता है (प्रमुख रचना: 'वंश भास्कर')।

प्रश्न - राजस्थानी भाषा का उत्पति काल है? (RAS 2000)

(A) 15वीं शताब्दी का अंतिम चरण

(B) 12वीं शताब्दी का अंतिम चरण

(C) 18वीं शताब्दी का अंतिम चरण

(D) 10वीं शताब्दी का अंतिम चरण

प्रश्न - ऐतिहासिक , भौगोलिक एंव भाषा वैज्ञानिकों के आधार पर राजस्थानी की उत्पति मानी जाती है- (RAS 1996)

(A) शौरसेनी अपभ्रंश **(B) नागर अपभ्रंश**

(C) मारू गुर्जर अपभ्रंश **(D) गुर्जर अपभ्रंश से**

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण-

❖ **सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण-**

- सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनी पुस्तक लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के 9वें खण्ड में सन् 1912 में राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले प्रथम व्यक्ति थे।
- सजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को 5 बोलियों में वर्गीकृत किया है जैसे-

1. पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)
2. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली
3. मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली
4. दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी बोली
5. दक्षिणी राजस्थानी बोली

(1) पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-

- यह मुख्यतः मारवाड़, मेवाड़, पूर्वी सिंध, जैसलमेर, बीकानेर, दक्षिणी पंजाब और जयपुर के उत्तरी - पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है ।
- मारवाड़ी राजस्थान में सबसे अधिक क्षेत्र में बोली जाती है।
- पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी को निम्नलिखित चार भागों में विभाजित किया गया है

(A) पूर्वी मारवाड़ी

- राजिया के सोरठे इसी बोली में लिखे गये हैं।

(B) उत्तरी मारवाड़ी

- इसके अंतर्गत बीकानेर , बागड़ी , शेखावाटी बोलियों का समावेश किया जाता है ।
- वेलि क्रिसन रुक्मिणी री की रचना उत्तरी मारवाड़ी में की गई है ।

(C) पश्चिमी मारवाड़ी

- इसके अंतर्गत थली और ढटकी आदि बोलियों का समावेश किया जाता है ।

(D) दक्षिणी मारवाड़ी

- इसके अंतर्गत खेराड़ी , गौड़वाड़ी , सिरोही , गुजराती, देवड़ावाड़ी आदि बोलियों का समावेश किया जाता है।

(2) उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली

- इसमें मेवाती एवं अहीरवाटी को शामिल किया गया है।
- **क्षेत्र :** अलवर, भरतपुर और कोटपूतली का उत्तरी भाग।

(3) मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली

- मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली में ढूंढाड़ी व हाड़ौती बोली शामिल है।
- **उप-बोलियाँ:** तोरावाटी, राजावाटी, चौरासी, नागरचोल, किशनगढ़ी, अजमेरी।

(4) दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली

- दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली में मालवी व रांगड़ी बोली शामिल है ।

अध्याय - 8

राजस्थान के लोक देवी – देवता

❖ **लोक देवियाँ –**

▪ **करणी माता**

- करणी माता चारणों की कुलदेवी एवं बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी हैं।
- 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात हैं।
- जन्म सुआप गाँव (फलौदी) के चारण परिवार में हुआ था।
- इनके बचपन का नाम रिद्धिबाई था।
- करणी माता का मंदिर को मठ कहलता है।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।
- करणी माता के मंदिर में पाए जाने वाले सफेद चूहों को **काबा** कहा जाता हैं।
- इन्हें **'चूहों वाली देवी'** और **'दाढ़ी वाली डोकरी'** के नाम से जाना जाता हैं।
- यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल था।
- राव कान्हा ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर के लिए चांदी के किवाड़ भेंट किया।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ा माता' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर हैं ।
- सफेदचील को करणी माता का रूप माना जाता हैं ।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- चैत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में लक्खी मेला भरता है।
- देशनोक बीकानेर में करणी माता के मंदिर की नींव स्वयं करणी माता ने रखी थी।
- करणी माता के इस मंदिर में दो कढ़ाई स्थित हैं, जिनके नाम - **"सावन-भादो कड़ाइयाँ"** हैं।

प्रश्न - राजस्थान की लोक देवी नहीं हैं ? (RAS 2012)

(A) हिडिम्बा माता	(B) आवरी माता
(C) करणी माता	(D) छींक माता

❖ **जीण माता**

- चौहान वंश की आराध्य देवी । जीण माता (Jeen Mata) राजस्थान के सीकर जिले के रेवासा ग्राम के पास स्थित एक अत्यंत प्राचीन और सिद्ध पीठ हैं।
- ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी।
- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा हैं।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढाई प्याला मदिरा पान करती हैं ।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती हैं ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता हैं।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ हैं । इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती हैं ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा हैं ।
- लोक मान्यताओं के अनुसार, जब औरंगजेब ने इस मंदिर को तोड़ने की कोशिश की थी, तब माता ने भौंरों (मधुमक्खियों) का रूप धरकर उसकी सेना पर हमला कर दिया था।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी हैं ।

प्रश्न - राजस्थान के लोक साहित्य में किस देवी - देवता का गीत सबसे लम्बा हैं ? (RAS 2010)

(A) जीणमाता	(B) गोगाजी
(C) आईमाता	(D) मल्लीनाथ जी

❖ कैला देवी

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी । कैला देवी राजस्थान के करौली जिले में त्रिकूट पर्वत की घाटी में स्थित एक प्रमुख शक्तिपीठ है
- इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं । **लांगुरिया:** कैला देवी के भक्तों के बीच 'लांगुरिया' गीत अत्यंत प्रसिद्ध हैं। लांगुरिया को हनुमान जी का स्वरूप माना जाता है और मंदिर के सामने हनुमान जी (लांगुरिया) का एक छोटा मंदिर भी है।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता है।
- कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।
- मंदिर के गर्भगृह में दो प्रतिमाएं हैं। दाईं ओर कैला देवी की प्रतिमा है, जिसका मुख थोड़ा तिरछा है, और बाईं ओर चामुंडा माता की प्रतिमा है।

❖ शिला देवी

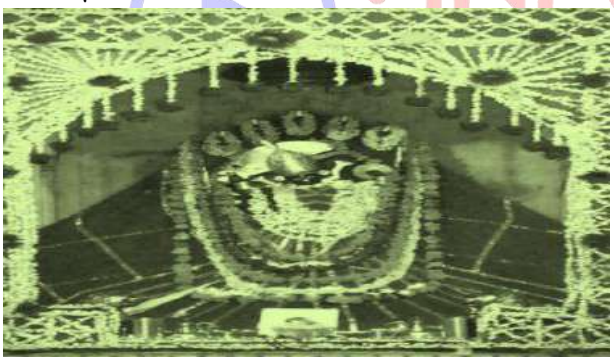

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी ।
- इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।
- शिलामाता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है ।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर 'जस्सोर' नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति 16वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।
- आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग में स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था
- मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका।
- आमेर में चैत्र और आश्विन दोनों नवरात्रों में मेला भरता है।

चरजा - चारण देवियों की स्तुति चरजा कहलाती हैं। जो दो प्रकार की होती हैं। 1. सिधाऊ - शांति/सुख के समय उपासना 2. घाडाऊ - विपत्ति के समय उपासना
चरजा - चारण देवियों की स्तुति चरजा कहलाती हैं। जो दो प्रकार की होती हैं। 1. सिधाऊ - शांति/सुख के समय उपासना 2. घाडाऊ - विपत्ति के समय उपासना

❖ जमुवायमाता

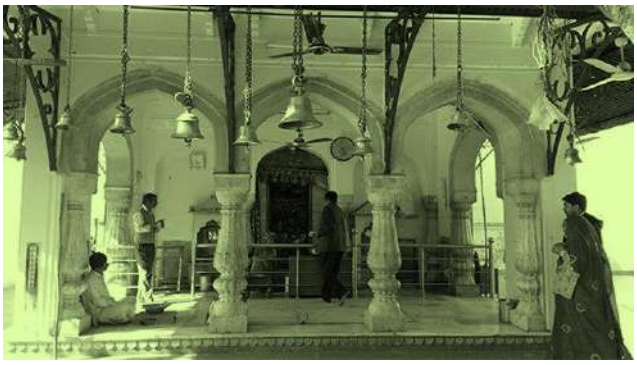

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी ।
- इनका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर ग्रामीण में है।
- इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।
- चैत्र और आश्विन दोनोंनवरात्रों के दौरान यहाँ विशाल मेले का आयोजन होता है

❖ आई माता

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी है ।
- इनका मंदिर बिलाड़ा गाँव (जोधपुर ग्रामीण) में है।
- इनके मंदिर को 'दरगाह' व थान को 'बड़ेर' कहा जाता है।
- ये रामदेवजी की शिष्या थी।
- इन्हें माजी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा जलने वाले दीपक की ज्योति से केसर टपकती रहती है । इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाता है ।

INFUSION NOTES
ONLY THE BEST WILL DO